RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

12th HISTORY

ARJUN BATCH

औपनिवेशिकता और देहात

अध्याय-9 | भाग-1

19 अगस्त 2026 || 04:00 PM



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

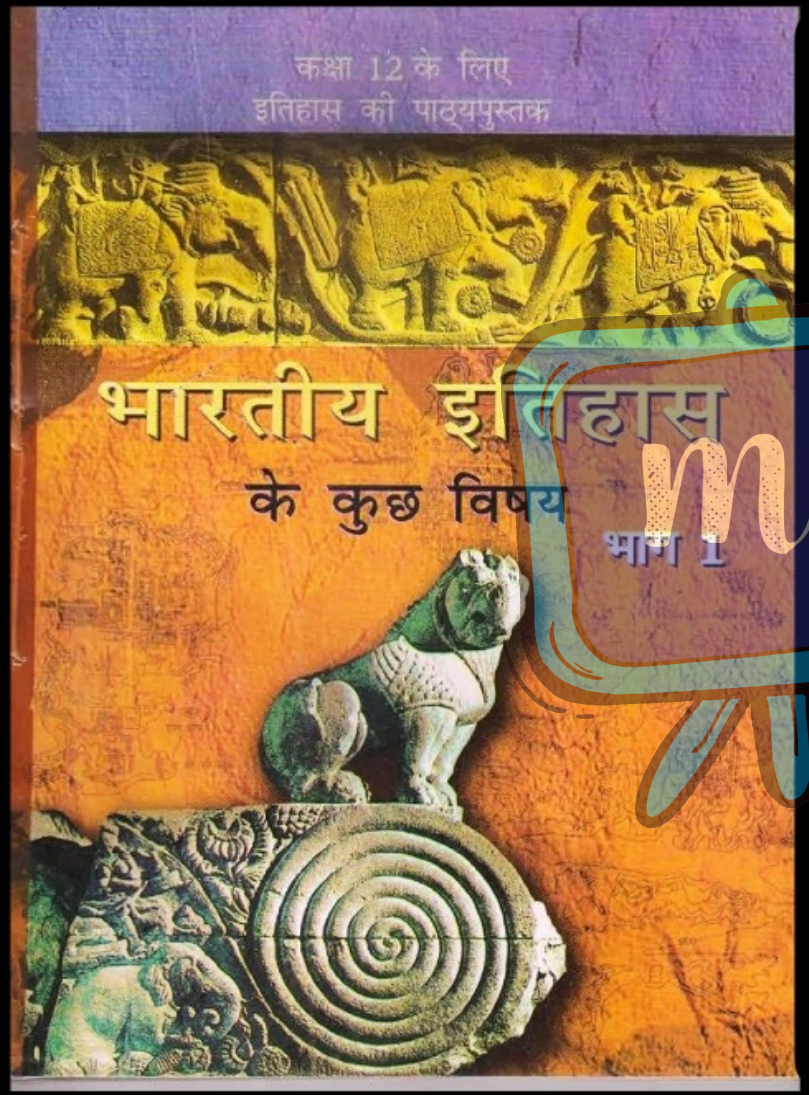

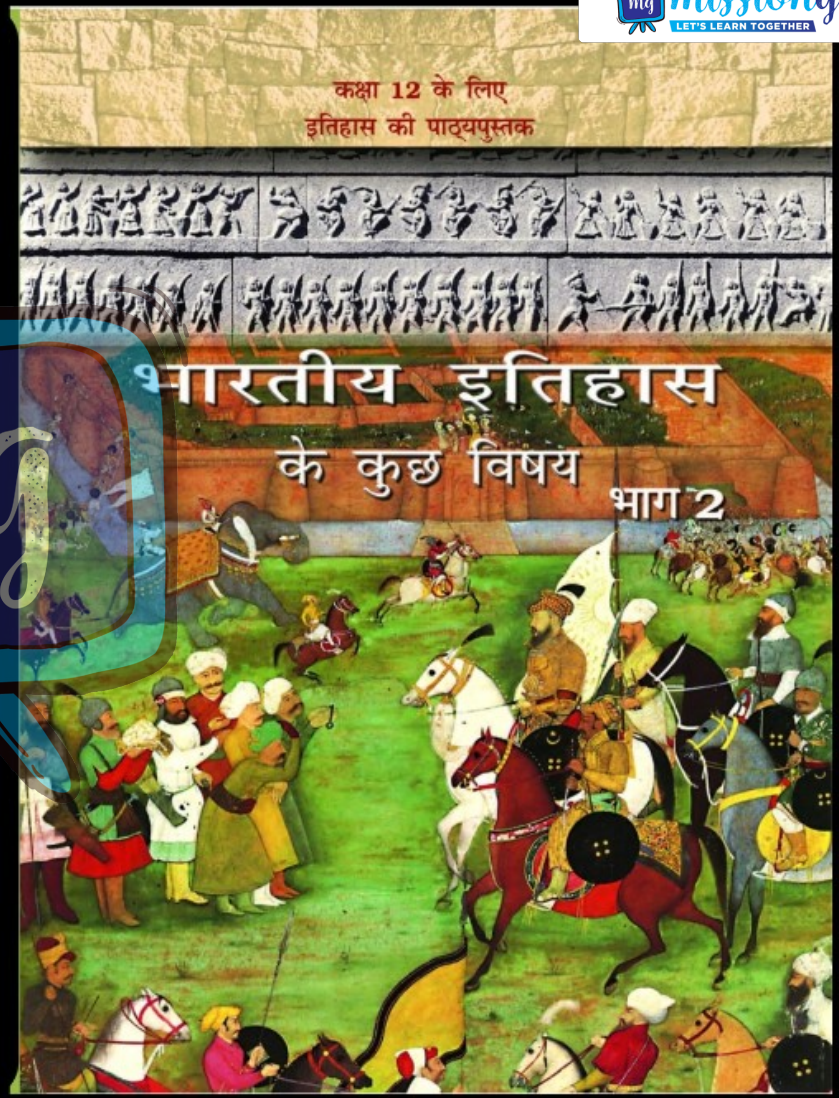

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

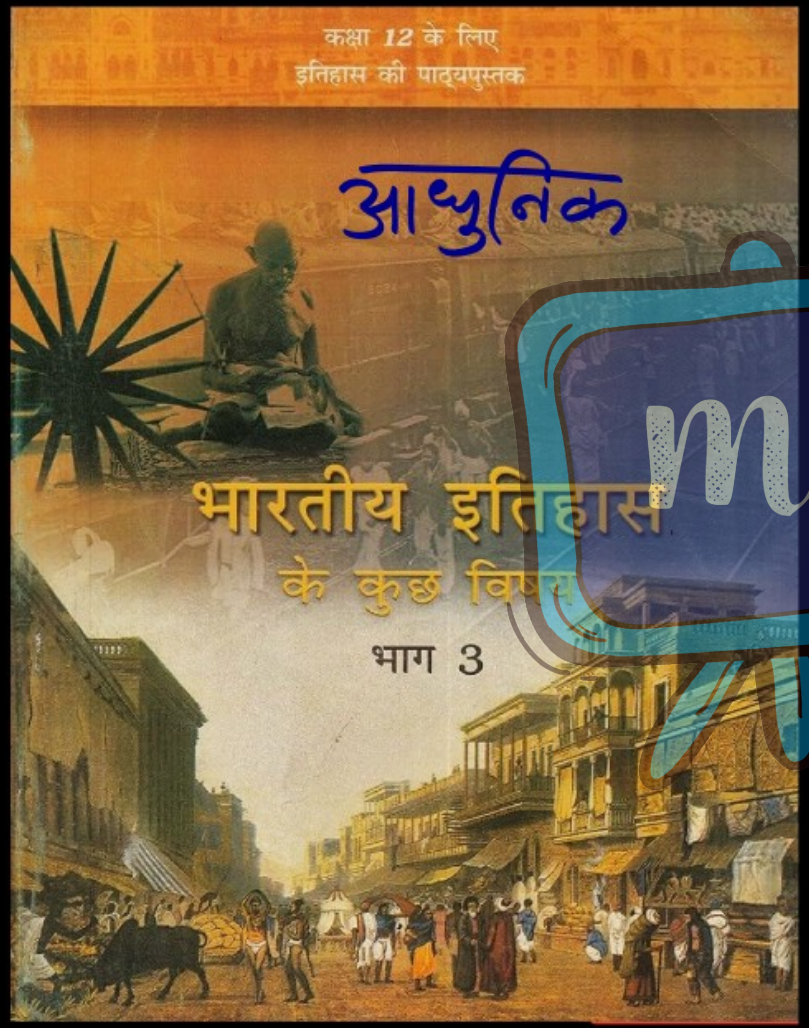

विषय सूची

आमुख iii
पाठ्यपुस्तकों में पाठ्य सामग्री का पुनर्संयोजन v
अध्ययन का केंद्रबिंदु निश्चित करना vii
इस पुस्तक का कैसे प्रयोग किया जाए? xiii

भाग 3

विषय नौ
उपनिवेशवाद और देहात 227
सरकारी अभिलेखों का अध्ययन
विषय दस
विद्रोही और राज 258
1857 का आंदोलन और उसके व्याख्यान
विषय ग्यारह
महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन 286
सविनय अवज्ञा और उसके आगे
विषय बारह
संविधान का निर्माण 316
एक नए युग की शुरुआत

© mg not to be republished

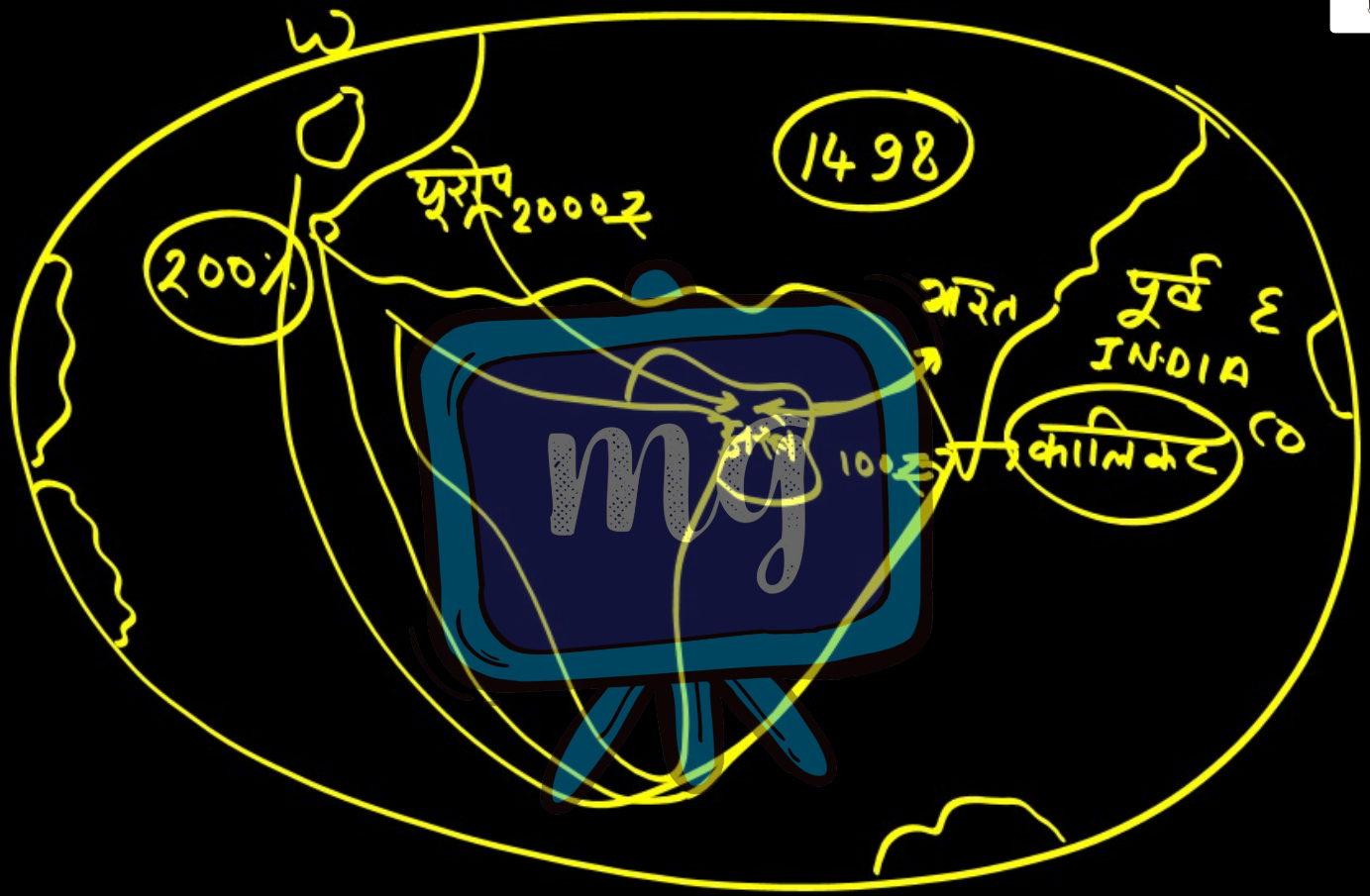
W
1498
200%
यूरोप 2000 ₹
भारत
पूर्व ६
INDIA
CO
कालिकट
100 ₹

1498 - वास्को डी गामा

1600 → भारत] मुगल
1608

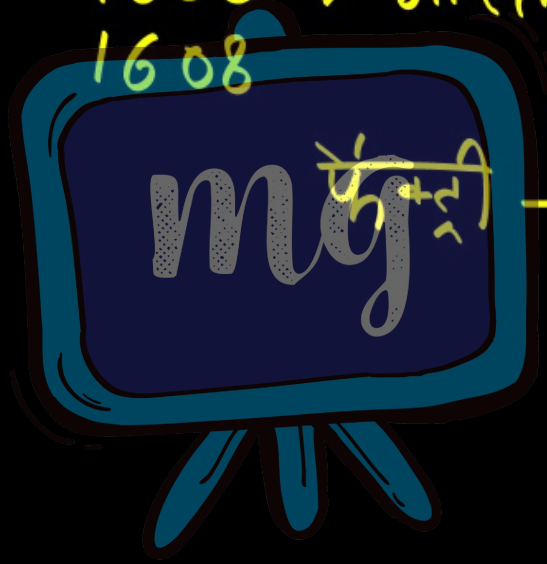

फैक्ट्री → सूरत ∝

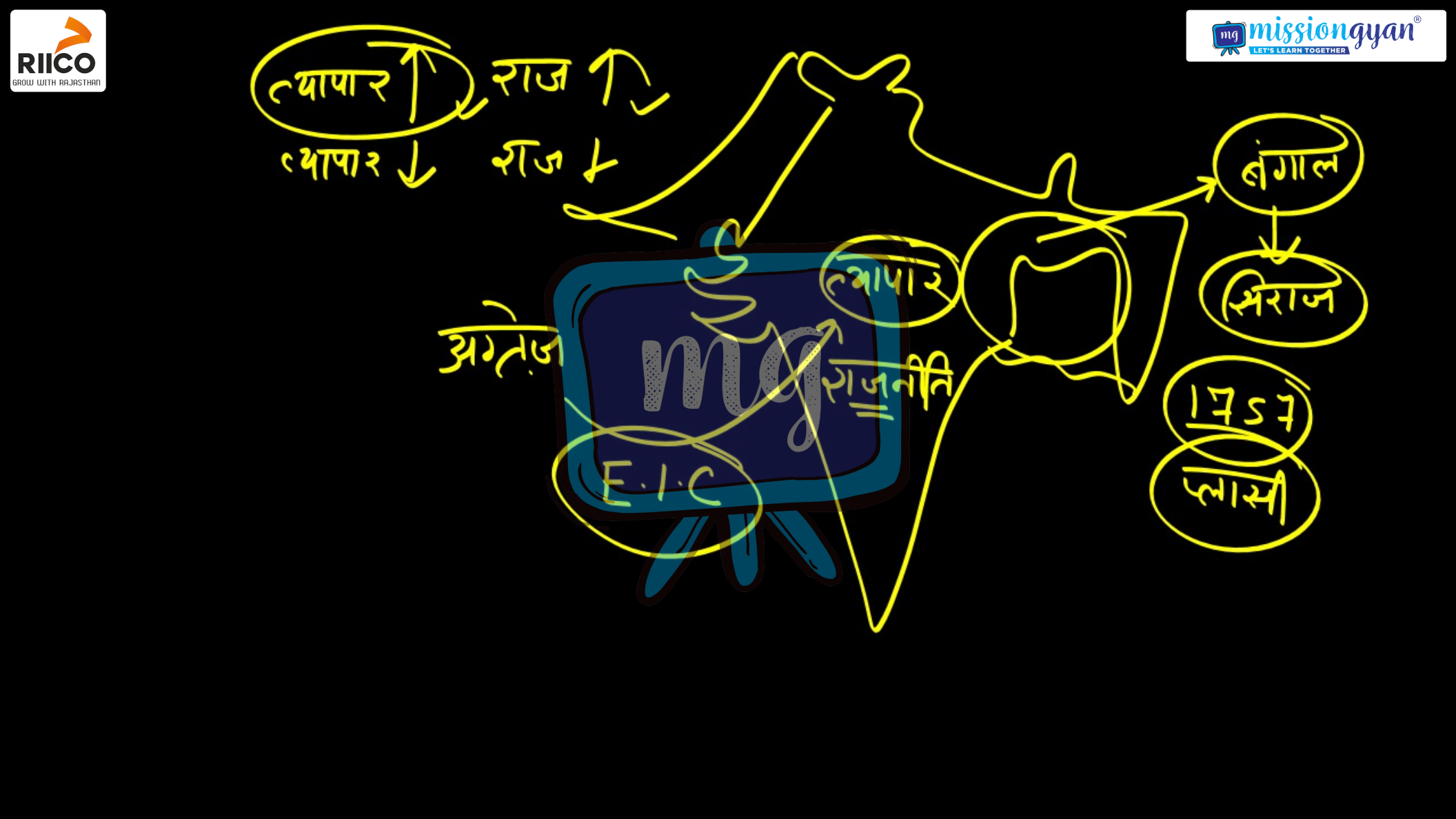
व्यापार
राज
व्यापार
राज
अंग्रेज़
E.I.C
व्यापार
राजनीति
बंगाल
सिराज
1757
प्लासी

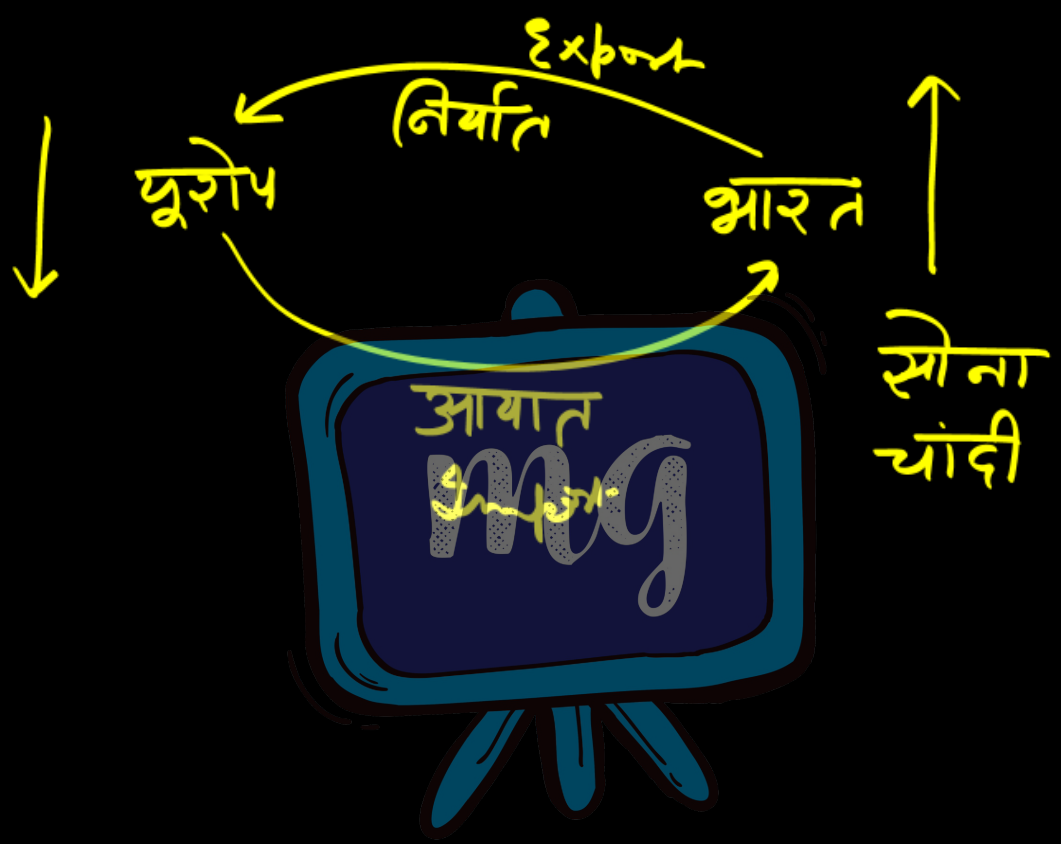
Export
निर्यात
यूरोप
भारत
सोना
चांदी
आयात
mg


mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उपनिवेशवाद

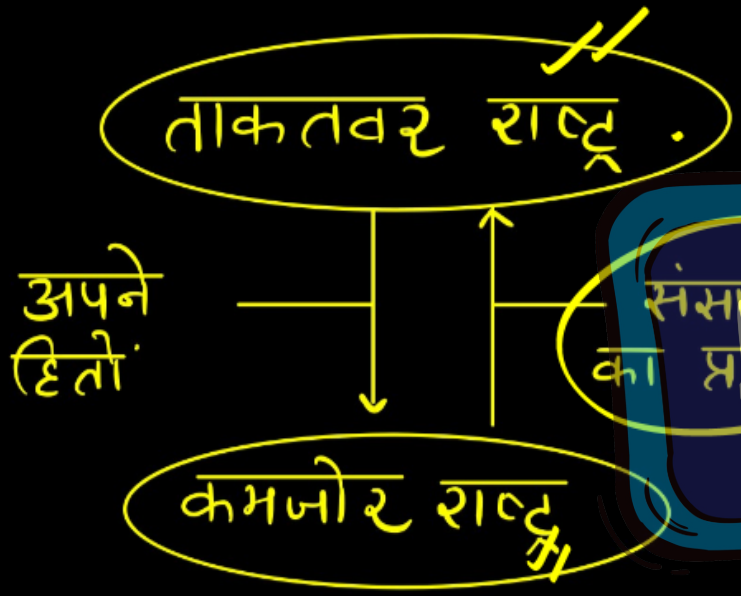

उपनिवेशवाद का अर्थ

- किसी समूह एवं शक्तिशाली राष्ट्र द्वारा अपने विभिन्न हितों को साधने के लिए किसी निर्बल राष्ट्र के विभिन्न संसाधनों का शक्ति के बल पर उपभोग करना।
- भारत में लंबे समय तक ब्रिटेन के द्वारा औपनिवेशिक शासन किया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- 23 जून 1757 को प्लासी का युद्ध हुआ।

ईस्ट इंडिया कंपनी (अंग्रेज) Vs बंगाल का नवाब (सिराजुद्दौला)

- भारत में औपनिवेशिक शासन सर्वप्रथम बंगाल में स्थापित हुआ।

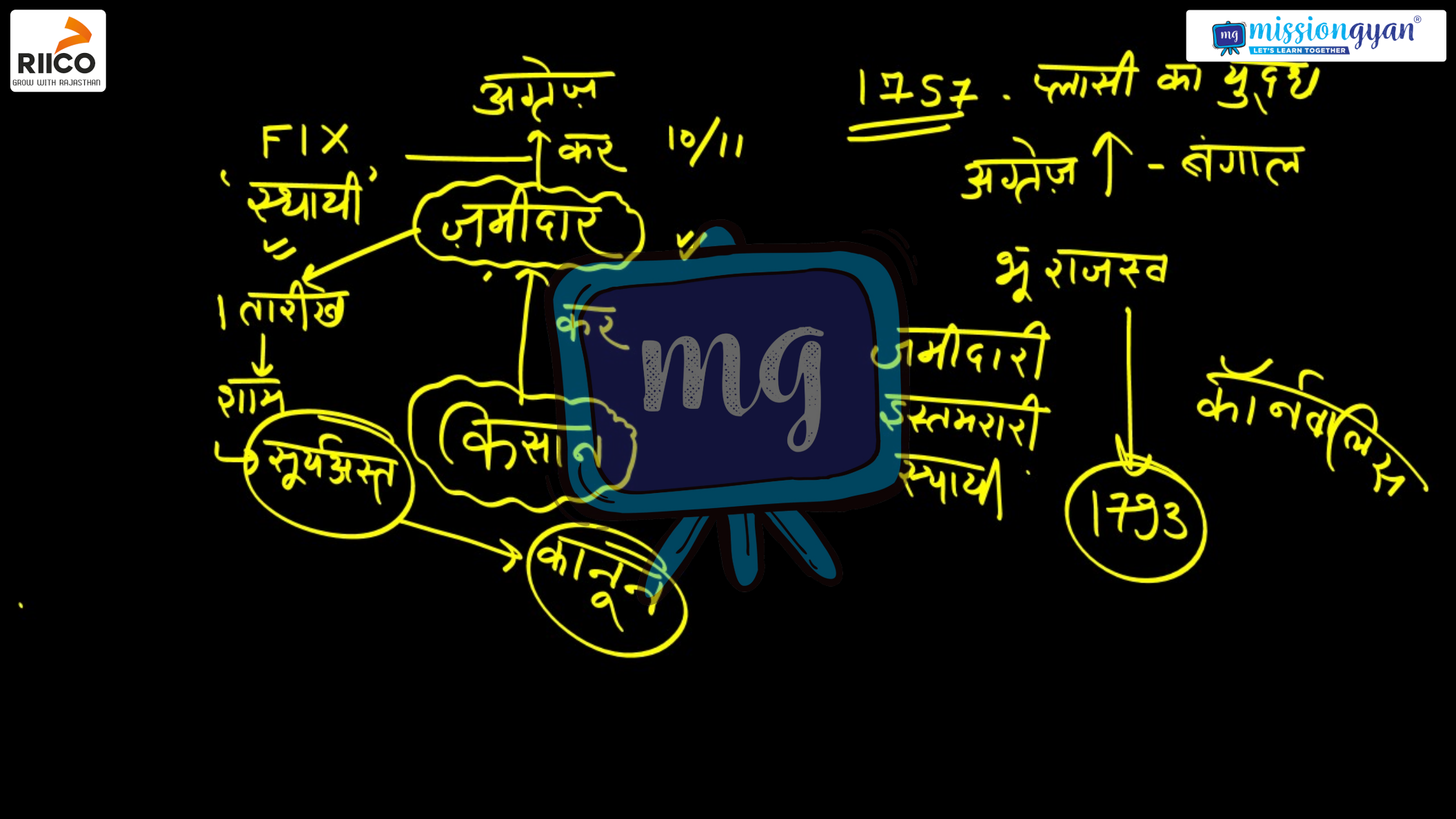
1757 . प्लासी का युद्ध
अंग्रेज़ ↑ - बंगाल
अंग्रेज़
कर
FIX
'स्थायी'
=
ज़मींदार
10/11
=
1 तारीख
शाम
सूर्यअस्त
कानून
किसान
कर
mg
भू राजस्व
जमींदारी
इस्तमरारी
स्थायी
1793
कॉर्नवालिस

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

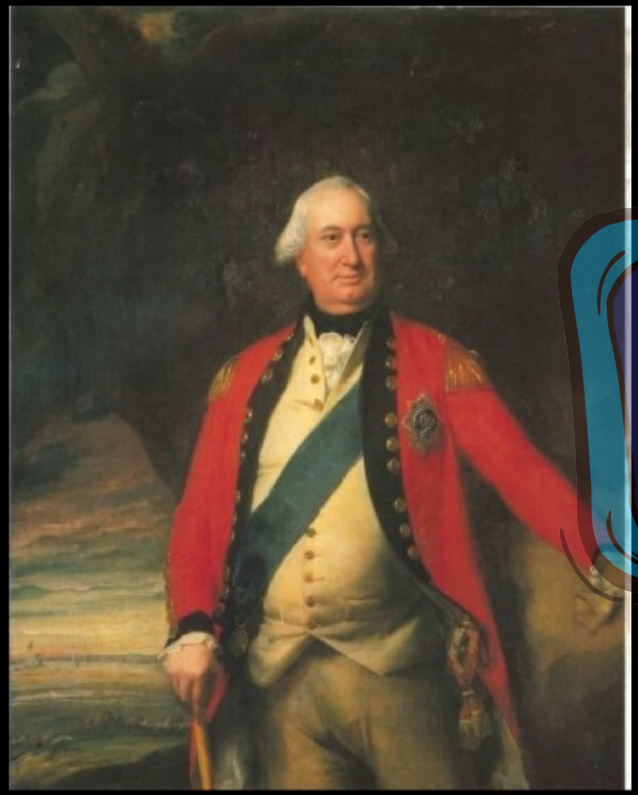

- 1793 – लॉर्ड कार्नवालिस के द्वारा बंगाल में इस्तमरारी व्यवस्था / जमींदारी व्यवस्था / स्थायी बन्दोबस्त लागू किया गया।

कृषक → जमींदार → ईस्ट इंडिया कंपनी

- सूर्यास्त कानून के तहत जमींदारी नीलाम कर दी जाती थी।

बंगाल का गवर्नर-जनरल (1786-1793)

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कृषि → खाद
→ ऋण।] जमींदार

उद्यम Co.

FIX

1. **बंगाल और वहां के जमींदार :-**

जमींदारी व्यवस्था क्यों लागू की गई ?

- अंग्रेज (ईस्ट इंडिया कम्पनी) राजस्व से प्राप्त आय को निश्चित करना चाहते थे।
- जमींदारों के पास कृषि में सुधार करने के लिए पूंजी और उद्यम दोनों होंगे।
- जमींदार वर्ग कंपनी के प्रति वफादार बना रहेगा।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- 1793 ई. में इस्तमरारी बन्दोबस्त लागू होने के बाद जमींदार गाँव में भू-स्वामी नहीं रहा, बल्कि वह राज्य का राजस्व समाहर्ता (संग्राहक) मात्र था।
- सूर्यास्त कानून के तहत जमींदारी की नीलामी कर दी जाती थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. प्लासी का युद्ध कब और (किसके बीच हुआ?

स्थायी बंदोबस्त

Q. जमींदारी व्यवस्था पर एक लेख लिखें?



Q. सूर्यअस्त कानून क्या था?

Q. अंग्रेजों से जमींदारी व्यवस्था क्यों शुरू की?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



ज़मींदारी की निलामी

राजस्व बकाया → निलामी

नकली खरीदार

राजा के नौकर

mg


mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

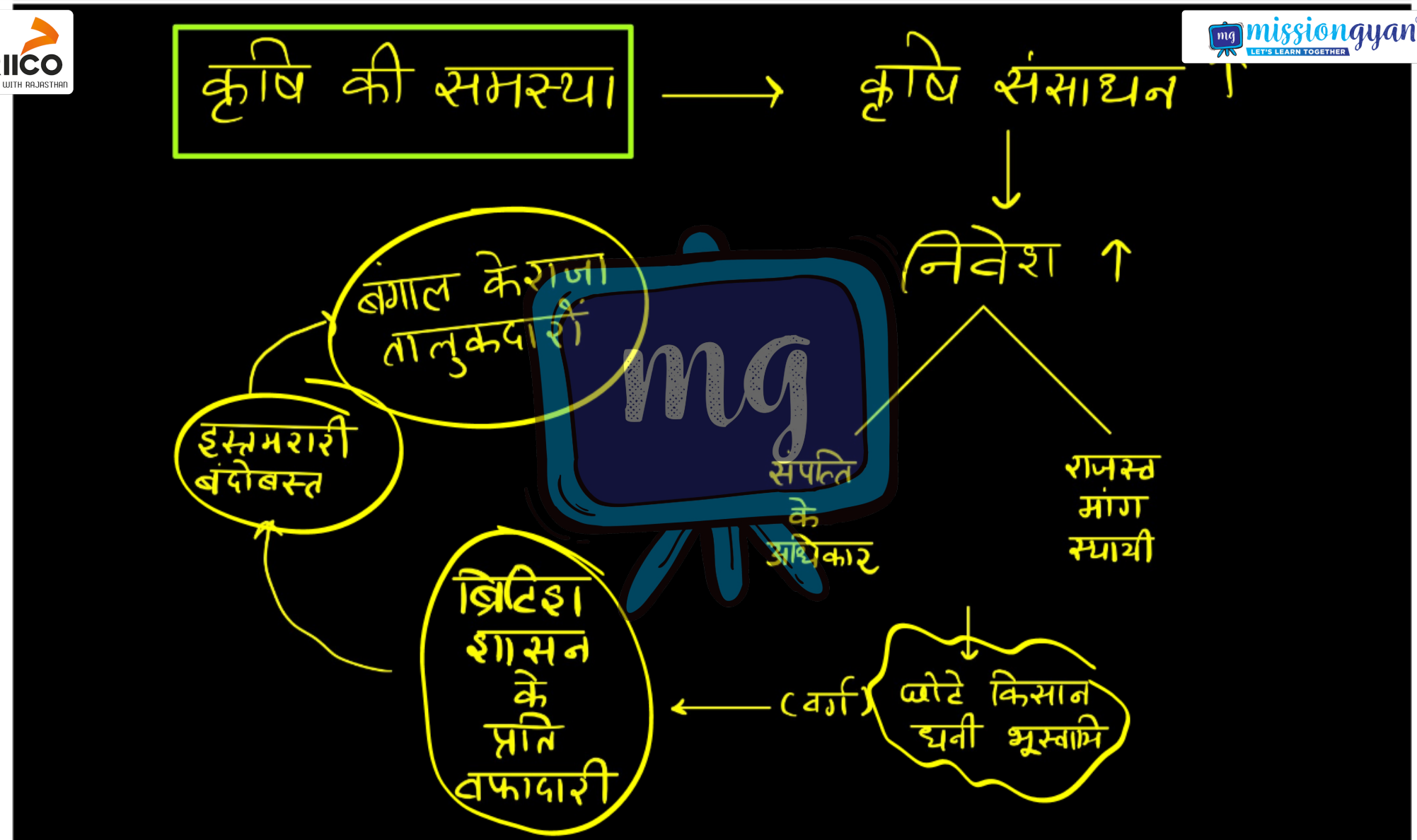

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कंपनी अधिकारियों की सोच

- ज़मींदार में सुरक्षा का भाव।
- वे निवेश करेंगे।
- राजस्व भरने में कोताही क्यों

जमींदारों की असफलता के कारण

1. प्रारम्भिक मांगें बहुत ऊँची थी।
2. यह ऊँची मांगें 1790 के दशक में लागू की गयी थी, जब कृषि की उपज की कीमतें नीचीं थी।
3. राजस्व असमान था (अकाल)
4. प्रारम्भ में जमींदार की शक्ति को रैयत से राजस्व इकट्ठा करने और अपनी जमींदारी का प्रबंध करने तक ही सीमित कर दिया था। स्थानीय न्याय और स्थानीय पुलिस की व्यवस्था करने की शक्ति छीन ली गयी थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

18वीं शताब्दी → धनी किसान (कर्ज) साहूकार + महाजन → ज़मींदारों से अधिक शक्तिशाली

अन्य नाम

- पंटीदार
- हवलदार
- मण्डल

- गांव में रहते थे
- जमींदारों का प्रतिरोध
- रैयतों को एकजुट
- ज़मींदारी खरीद लेते थे।

जोतदार

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

जोतदारों का उदय

- जोतदार – धनी किसानों का समूह



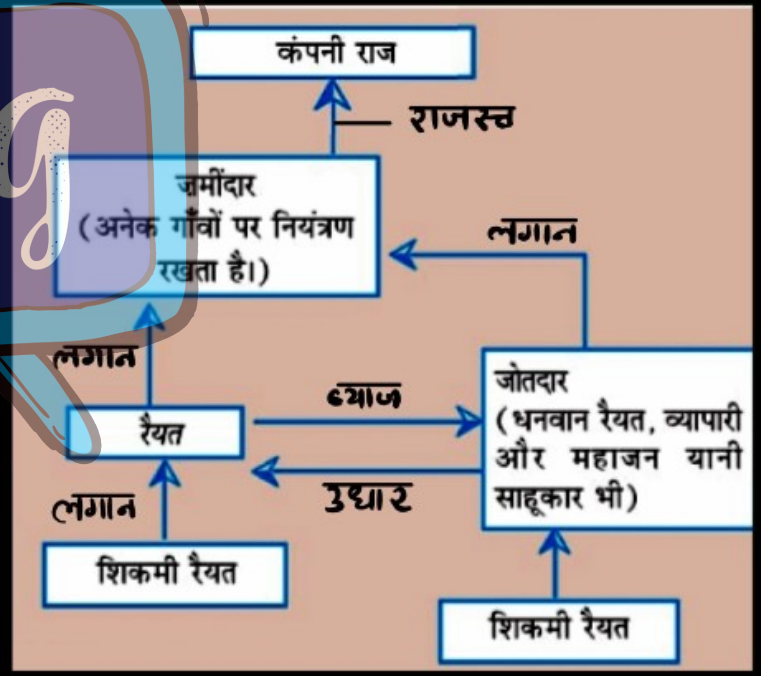

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



जमींदार की ओर से प्रतिरोध

- जमींदारी/भू-संपदा की संभावित नीलामी की समस्या से निपटने के लिए जमींदारों ने नयी रणनीतियां बनायी।

1. फर्जी बिक्री – जैसे बर्दवान में की गयी नीलामी की घटना।
2. नए जमींदार को जमीन का कब्जा नहीं देते थे।
3. पुराने रैयत नए जमींदार का विरोध करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

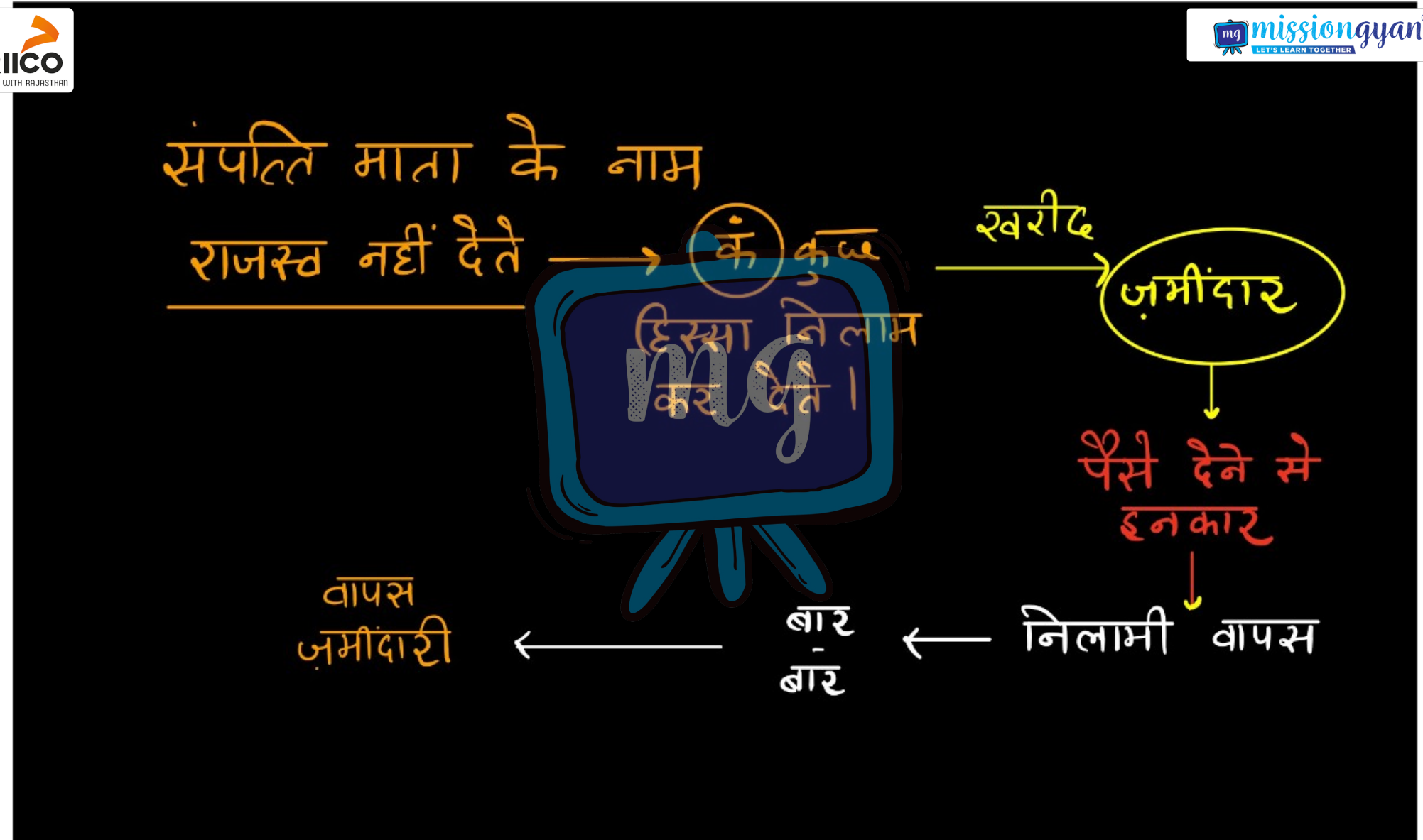

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में मंदी की स्थिति समाप्त हो गयी। + नियम लचीला
- इसके बाद जमींदारों ने सत्ता को सुदृढ़ बना लिया।



1930 मंदी ⟶ जमींदार ↓
जोतदार ↑

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

'राजा' शब्द का प्रयोग अकसर शक्तिशाली ज़मींदारों के लिए किया जाता था।

'*ताल्लुकदार*' का शब्दिक अर्थ है वह व्यक्ति जिसके साथ ताल्लुक़ यानी संबंध हो। आगे चलकर ताल्लुक़ का अर्थ क्षेत्रीय इकाई हो गया।

'*रैयत*' शब्द का प्रयोग अंग्रेज़ों के विवरणों में किसानों के लिए किया जाता था (अध्याय-8)। बंगाल में रैयत ज़मीन को खुद काश्त नहीं करते थे, बल्कि 'शिकमी-रैयत' को आगे पट्टे पर दे दिया करते थे।

बेनामी का शाब्दिक अर्थ 'गुमनाम' है, हिंदी तथा कुछ अन्य भारतीय भाषाओं में इस शब्द का प्रयोग ऐसे सौदों के लिए किया जाता है जो किसी फ़र्जी या अपेक्षाकृत महत्त्वहीन व्यक्ति के नाम से किए जाते हैं और उनमें असली फ़ायदा पाने वाले व्यक्ति का नाम नहीं दिया जाता।

लठियाल, का शाब्दिक अर्थ है वह व्यक्ति जिसके पास लाठी या डंडा हो। ये ज़मींदार के लठैत यानी डंडेबाज पक्षधर होते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

दिनाजपुर के जोतदार

बुकानन ने बताया है कि उत्तरी बंगाल के दिनाजपुर जिले के जोतदार किस प्रकार ज़मींदार के अनुशासन का प्रतिरोध और उसकी शक्ति की अवहेलना किया करते थे :

> भूस्वामी इस वर्ग के लोगों को पसंद नहीं करते थे, लेकिन यह स्पष्ट है कि इन लोगों का होना बहुत ज़रूरी था क्योंकि इनके बिना, ज़रूरतमंद काश्तकारों को पैसा उधार कौन देता...
>
> *जोतदार*, जो बड़ी-बड़ी ज़मीनें जोतते हैं, बहुत ही हठीले और ज़िद्दी हैं और यह जानते हैं कि ज़मींदारों का उन पर कोई वश नहीं चलता। वे तो अपने राजस्व के रूप में कुछ थोड़े से रुपये ही दे देते हैं और लगभग हर किस्त में कुछ-न-कुछ बक़ाया रक़म रह जाती है। उनके पास उनके पट्टे की हकदारी से ज़्यादा ज़मीनें हैं। ज़मींदार की रक़म के कारण, अगर अधिकारी उन्हें कचहरी में बुलाते थे और उन्हें डराने-धमकाने के लिए घंटे-दो-घंटे कचहरी में रोक लेते हैं तो वे तुरंत उनकी शिकायत करने के लिए फ़ौजदारी थाना (पुलिस थाना) या मुन्सिफ़ की कचहरी में पहुँच जाते हैं और कहते हैं कि ज़मींदार के कारिंदों ने उनका अपमान किया है। इस प्रकार राजस्व की बक़ाया रक़मों के मामलें बढ़ते जाते हैं और जोतदार छोटे-छोटे रैयत को राजस्व न देने के लिए भड़काते रहते हैं...

➲ यह बताइए कि *जोतदार* ज़मींदारों की सत्ता का किस प्रकार प्रतिरोध किया करते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बुकानन कौन था?

फ्रांसिस बुकानन एक चिकित्सक था जो भारत आया और बंगाल चिकित्सा सेवा में (1794 से 1815 तक) कार्य किया। कुछ वर्षों तक, वह भारत के गवर्नर जनरल लार्ड वेलेज़्ली का शल्य-चिकित्सक रहा। कलकत्ता (वर्तमान में कोलकत्ता) के अपने प्रवास के दौरान उसने कलकत्ता में एक चिड़ियाघर की स्थापना की, जो कलकत्ता अलीपुर चिड़ियाघर कहलाया। वे थोड़े समय के लिए वानस्पतिक उद्यान के प्रभारी रहे। बंगाल सरकार के अनुरोध पर उन्होंने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकार क्षेत्र में आने वाली भूमि का विस्तृत सर्वेक्षण किया। 1815 में वह बीमार हो गए और इंग्लैण्ड चले गए। अपनी माता की मृत्यु के पश्चात् वे उनकी जायदाद के वारिस बने और उन्होंने उनके वंश के नाम 'हैमितटन' को अपना लिया। इसलिए उन्हें अकसर बुकानन-हैमितटन भी कहा जाता है।